



0755CH15

पञ्चदशः पाठः

लालनगीतम्



उदिते सूर्ये धरणी विहसति ।
पक्षी कूजति कमलं विकसति ॥1॥
नदति मन्दिरे उच्चैर्ढक्का ।
सरितः सलिले सेलति नौका ॥2॥
पुष्पे पुष्पे नानारङ्गाः ।
तेषु डयन्ते चित्रपतङ्गाः ॥3॥
वृक्षे वृक्षे नूतनपत्रम् ।
विविधैर्वर्णैर्विभाति चित्रम् ॥4॥
धेनुः प्रातर्यच्छति दुग्धम् ।
शुद्धं स्वच्छं मधुरं स्निग्धम् ॥5॥
गहने विपिने व्याघ्रो गर्जति ।
उच्चैस्तत्र च सिंहः नर्दति ॥6॥
हरिणोऽयं खादति नवघासम् ।
सर्वत्र च पश्यति सविलासम् ॥7॥
उष्ट्रः तुङ्गः मन्दं गच्छति ।
पृष्ठे प्रचुरं भारं निवहति ॥8॥
घोटकराजः क्षिप्रं धावति ।
धावनसमये किमपि न खादति ॥9॥
पश्यत भल्लुकमिमं करालम् ।
नृत्यति थथथै कुरु करतालम् ॥10॥

-सम्पदानन्दमिश्रः

—◆ शब्दार्थः ◆—

| | | | |
|--------------|---|----------------------------|--------------|
| उदिते | – | उगने पर, निकलने पर | on the rise |
| नदति | – | आवाज/ध्वनि करता है | rings |
| उच्चैः | – | ऊँची आवाज में, जोर से | loudly |
| ढक्का | – | नगाड़ा | drum |
| सेलति | – | डगमगाती है, हिलती डुलती है | shakes |
| डयन्ते | – | उड़ते हैं | fly |
| चित्रपतङ्गाः | – | तितलियाँ | butterflies |
| वर्णैः | – | रंगों से | with colours |
| विभाति | – | सुशोभित होता है | shines |
| स्निग्धम् | – | मुलायम, चिकना | soft |
| गहने | – | घने | dense |
| विपिने | – | जंगल में | in forest |
| नर्दति | – | दहाड़ता है | roars |
| तुङ्गः | – | ऊँचा | lofty, high |
| निवहति | – | ढोता है | carries |
| क्षिप्रम् | – | जल्दी से, तेजी से | swiftly |
| भल्लुकः | – | भालू | bear |
| करालम् | – | भयानक | ferocious |
| करतालम् | – | ताली | clapping |





1. गीतम् सस्वरं गायत।
2. एकपदेन उत्तरत-
 - (क) का विहसति?
 - (ख) किम् विकसति?
 - (ग) व्याघ्रः कुत्र गर्जति?
 - (घ) हरिणः किं खादति?
 - (ङ) मन्दं कः गच्छति?
3. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-
 - (क) सलिले नौका सेलति।
 - (ख) पुष्पेषु चित्रपतङ्गाः डयन्ते।
 - (ग) उष्ट्रः पृष्ठे भारं वहति।
 - (घ) धावनसमये अश्वः किमपि न खादति।
 - (ङ) सूर्ये उदिते धरणी विहसति।
4. मञ्जूषातः समानार्थकपदानि चित्वा लिखत-

| पृथिवी | देवालये | जले | वने | मृगः | भयङ्करम् |
|--------|---------|-----|-----|------|----------|
|--------|---------|-----|-----|------|----------|

| | | | |
|--------|-------|---------|-------|
| धरणी | | विपिने | |
| करालम् | | हरिणः | |
| सलिले | | मन्दिरे | |

5. विलोमपदानि मेलयत-

| | |
|-------------|------------|
| मन्दम् | नूतनम् |
| नीचैः | स्निग्धम् |
| कठोरः | पर्याप्तम् |
| पुरातनम् | उच्चैः |
| अपर्याप्तम् | क्षिप्रम् |

6. उचितकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुचितकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

| | |
|-----------------------------------|--------------------------|
| (क) धावनसमये अश्वः खादति। | <input type="checkbox"/> |
| (ख) उष्ट्रः पृष्ठे भारं न वहति। | <input type="checkbox"/> |
| (ग) सिंहः नीचैः क्रोशति। | <input type="checkbox"/> |
| (घ) पुष्पेषु चित्रपतङ्गाः डयन्ते। | <input type="checkbox"/> |
| (ङ) वने व्याघ्रः गर्जति। | <input type="checkbox"/> |
| (च) हरिणः नवघासम् न खादति। | <input type="checkbox"/> |

7. अधोलिखितानि पदानि निर्देशानुसारं परिवर्तयत-

| | | | |
|------------------|-------------------|---|--------------|
| यथा- चित्रपतङ्गः | (प्रथमा-बहुवचने) | - | चित्रपतङ्गाः |
| भल्लुकः | (तृतीया-एकवचने) | - | |
| उष्ट्रः | (पञ्चमी-द्विवचने) | - | |
| हरिणः | (सप्तमी-बहुवचने) | - | |
| व्याघ्रः | (द्वितीया-एकवचने) | - | |
| घोटकराजः | (सम्बोधन-एकवचने) | - | |



8. चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-



खगाः
उडन्ते

विकसन्ति
सूर्यः

कमलानि
चित्रपतङ्गाः

उदेति
कूजन्ति

क्रीडन्ति
बालाः

.....

.....

.....

.....

.....